Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

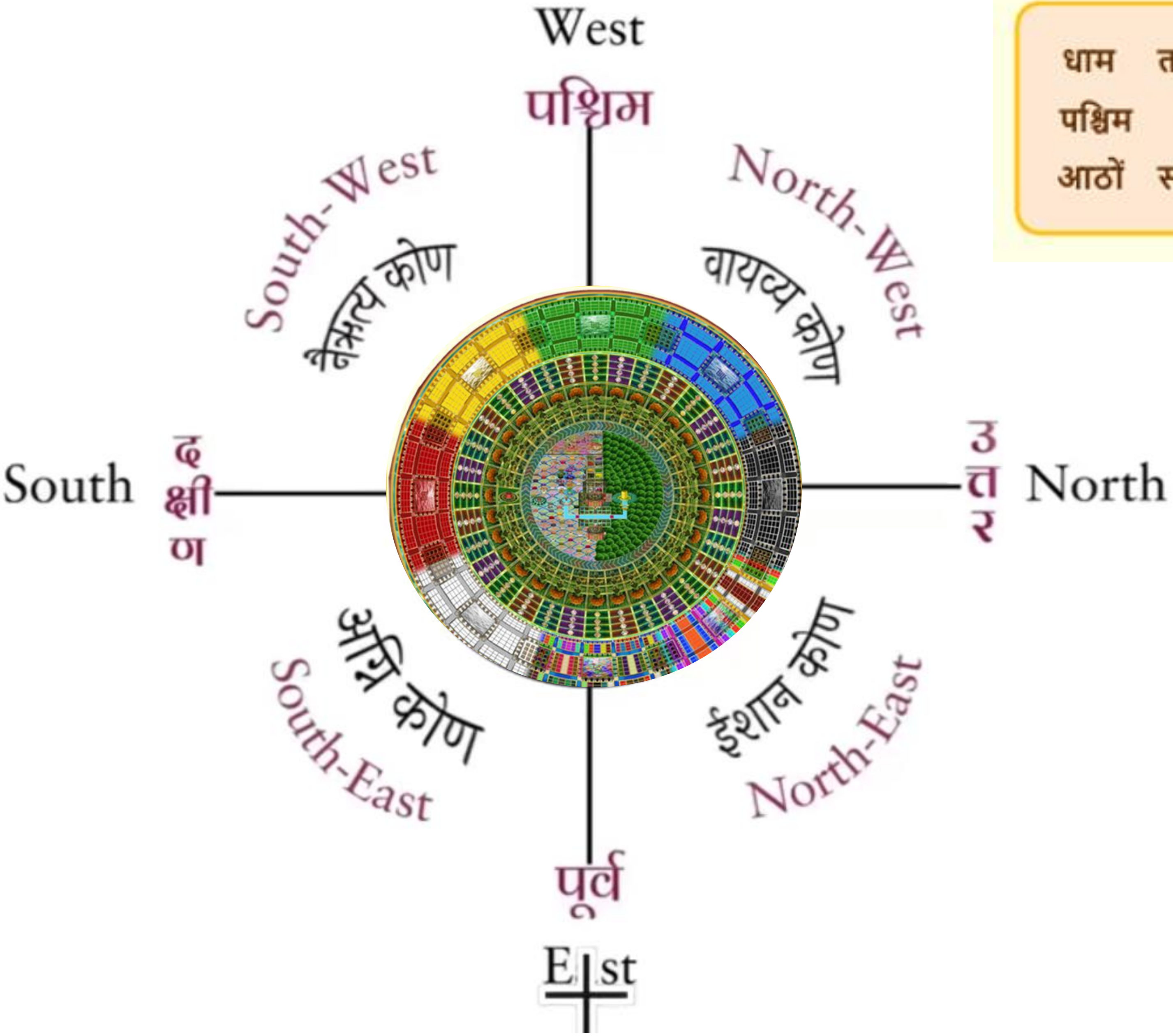

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर क्षीर दधि सागर, घृत मधु इक ठौर।

रस सर्वरस सागर, बिन मोमन न पावै और।।

इसकें अरस वतन बताया, इसकें सुख पेड का पाया।। १/२६

अब आओ रे इसक भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।

करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम।। ३/ १

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।

इसक याहीसों आवहीं, याहीसों होइए सनमुख।। ४/७

बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जागृत।

खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब विध इत।। ४/ १६

Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

1. रंगमहल चांदनी चौक
2. हौज कौसर ताल
3. कुंज निकुंज वन
4. माणिक महल
5. जवेरों की नहरों/वन के नहरों
6. पश्चिम चोगान
7. बड़ावन
8. पुखराजी महल
9. यमुनाजी

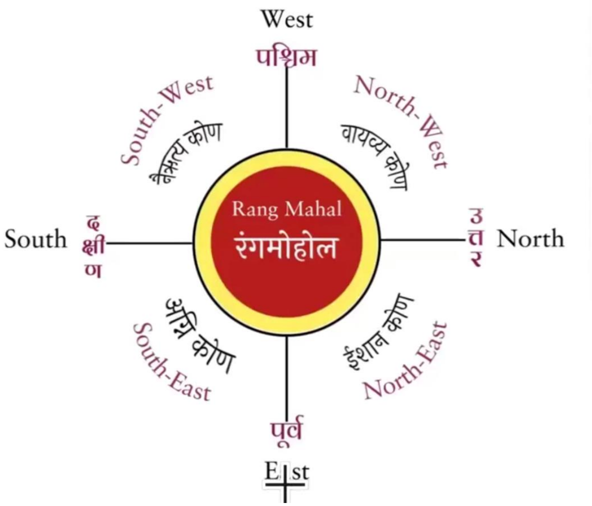

10 to 17 आठ सागर

नूर
नीर
क्षीर
दधि
घृत
मधु
इक
रस
सर्वरस

18 to 25 आठ जिमी

Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

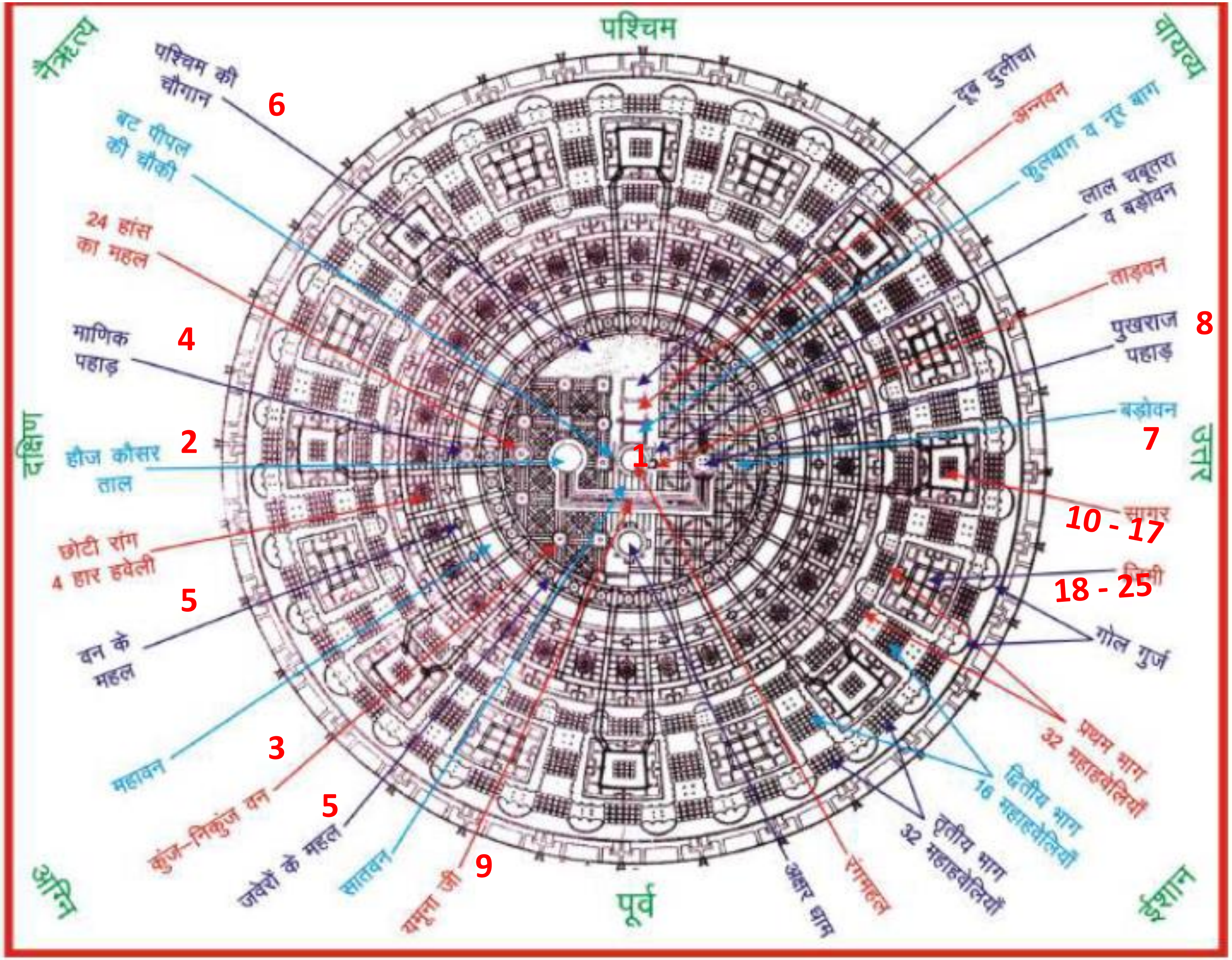

1 धाम 2 तालाब 3 कुंजवन सोहे, 4 मानिक 5 नेहरें वन की जोहे।
6 पश्चिम चौगान 7 बड़ोवन कहिए 8 पुखराजी 9 जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।
10- 17 18 - 25

1. रंगमहल चांदनी चौक
2. हौज कौसर ताल
3. कुंज निकुंज वन
4. माणिक महल
5. जवेरों की नहरों / वन के नहरों
6. पश्चिम चोगान
7. बड़ावन
8. पुखराजी महल
9. यमुनाजी

10 to 17 आठ सागर

18 to 25 आठ जिमी

Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

सागर	रंग	बातुनी अर्थ
नूर	सफेद	राजजी की शोभा
नीर	लाल	मूलमिलावा की बैठक की शोभा
क्षीर	पीला	एक दिली (वाहेदत)
दधि	हरा	युगल स्वरूप का दिव्य शृंगार
घृत	आसमानी	इश्क (प्रेम) का सागर
मधु	श्याम	इलम (ज्ञान) का सागर
रस	रस रंग	निसबत (सम्बन्ध) का सागर
सर्वरस	सर्व रंग	मेहेर (कृपा) का सागर

Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

Paramdham - : परमधाम पचीस पक्ष

OR